डाक्युमेंट्री बदल रहल बिया सरकारी नीति

आम लोगन के जीविका के संघर्ष के सिनेमा के पर्दा पऽ उकेरे वाला एशिया लाइवलीवुड डाक्युमेंट्री फिल्म फेस्टीवल के असर अब सरकारी नीतियन पऽ भी लउक रहल बा. बांस कारीगरन अउर रेहड़ी पटरी वाला के हक में बने वाला कानून एकर बानगी बा. अनिल पांडेय के रिपोर्ट...

ई आम डाक्यूमेंट्री फिल्म फेस्टीवल जइसन ना रहे. ई एगो अइसन डाक्युमेंट्री फिल्म फेस्टीवल रहे, जवना के विषयवस्तु के केंद्र में रहल- समाज के हाशिया पऽ खड़ा देशभर के करोड़न लोग के जीविका से जुड़ल मुद्दा. रोटी अउर रोजगार खातिर लोग कवने तरे के संघर्ष कऽ रहल बा ई दिल्ली के इंडिया हैबिटेड सेंटर में आयोजित नवां एशिया लाइवलीवुड डाक्युमेंट्री फिल्म फेस्टिवल में देखावल गइल चुनिंदा 18 फिलम में बखूबी देखे के मिलल. सेंटर फॉर सिविल सोसायटी के ओर से आयोजित तीन दिन के एह डाक्युमेंट्री फिल्म फेस्टीवल में ऊहे मुद्दा उठावल गइल, जवना के मीडिया के उठावे के चाहीं. असल में, एह फेस्टीवल के मकसद भी इहे बा कि डाक्युमेंट्री के माध्यम से जीविका से जुड़ल आम लोगन के दिक्कतन के समाज अउर नीति नियंता तक पहुंचावल जाव, ताकि ऊ ओह समस्या के समाधान के कवनो रास्ता निकाल पावे.

जीविका कैंपेन के नेशनल कोआर्डिनेटर अमित चंद्रा के कहनाम बा, 'मीडिया आम जनता से जुड़ल मुद्दा से किनारा कऽ लिहले बा. अइसन में आम लोगन के जीविका से जुड़ल समस्या के आवाज देवे खातिर एह फेस्टीवेल के आयोजन कइल जाला.'

सेंटर फॉर सिविल सोसायटी (सीसीएस) हाशिए पऽ खड़ा लोगन के हित में कवनो तरे से नीति बने, एही खातिर काम करेला. एह खातिर ऊ समाज के प्रबुद्द लोग अउर कानून आ नीति बनावे में महत्वपूर्ण भूमिका निभावे वाला नौकरशाह अउर राजनीतिज्ञन के जनोपयोगी नीति बनावे खातिर ना खाली सलाह देत बा, बलुक दबाव समूह के रूप में भी काम करत बा. एकरा खातिर सीसीएस जीविका कैंपेन नाम से एगो अभियान भी चला रखले बा. फिलम फेस्टिवल खातिर ऑनलाइन प्रविष्टि मांगल गइल रहे. प्राप्त प्रविष्टियन के विषेशज्ञन के सोझा स्क्रीनिंग के बाद 60 डाक्युमेंट्री फिलमन के प्रतियोगिता खातिर योग्य पावल गइल. एकरा बाद 18 फिलमन के जनता के सोझा प्रदर्शन खातिर चुनल गइल. एह फिलमन के प्रदर्शनी के दौरान चार सर्वश्रेष्ठ फिलमन के चयन कइल गइल

(बाएं ऊपर से नीचे): द रैट रेस क एगो दृश्य, जहर में जिनगीः सिटीज एज के एगो दृश्य
(दाएं ऊपर से नीचे): सुभाई घई से पुरस्कार लेत द रैट रेस के निर्देशक मरीयम, द लास्ट पेज के दृश्य

बा. प्रोफेशनल, फॉरेन, जनरल अउर स्टूडेंट कैटेगरी के तहत चार उत्कृष्ट डाक्युमेंट्री फिलमन के सीसीएस के ओर से 60 हजार, 40 हजार, 30 हजार अउर 20 हजार के धनराशि बतौर पुरस्कार भी दीहल गइल. प्रदर्शन के बाद 'आई वाज बोर्न इन डेल्ही', 'शिटिंग अंडरकरंट' अउर 'वी आर फुट सोल्जर्स' के पहिला , दोसर अउर तीसर पुरस्कार से सम्मानित कइल गइल. बेस्ट स्टूडेंट डाक्युमेंट्री वर्ग के तहत 'डायमंड बैंड' फिलम के पुरस्कृत कइल गइल, जबकि 'द रैट रेस', 'सायकिल ऑफ लाइफ' अउर 'हाइड अंडर माय सोल' नामक फिल्मन के 'स्पेशल मेंशन' कटेगरी के तहत विशेष पुरस्कार से नवाजा गइल. विजेतावन के बॉलीवुड के जानल मानल फिल्म निर्माता-निर्देशक सुभाष घई सम्मानित भी कइले. बॉलीवुड में 'शो मैन' के नाम से मशहूर सुभाष घई भी एह मौका पऽ डॉक्युमेंटरी फिलमन के अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम बतावत कहलन, 'जवन मुद्दा मीडिया तक नइखे पहुंच पावत डॉक्युमेंटरी फिलम उनके प्रभावी तरीका से लोग तक पहुंचावत बा.' इहवां जवना फिलमन के स्क्रीनिंग भइल ओकरा में 'हू किल्ड ची', 'ऑल राइज फॉर योर आनर', 'बायसिकिल जर्नी', 'वी आर फुट सोल्जर्स', 'वर्ल्डस मोस्ट फैशनेबल प्रीजन', 'द लास्ट पेज', 'सायकिल ऑफ लाइफ', 'ब्रेकिंग मुंबई', 'हाइड अंडर माय सोल', 'आई वाज बोर्न इन डेल्ही', 'ब्रेकिंग द सायलेंस', 'द रैट रेस', 'दिल्ली', 'सिटी एज' आदि मुख्य रुप से शामिल रहल. एह फिलमन में देश के बड़हन तबका के जीविकोपार्जन के दौरान उठावल जाए वाला तकलीफन अउर जन विरोधी सरकारी नीतियन के बयां कइल गइल बा. अगर 'दिल्ली' के बात कइल जाव तऽ एह डाक्युमेंट्री में दिल्ली में आवे वाला प्रवासी मजदूरन के पीड़ा के मार्मिक तरीका से दर्शावल गइल बा. फिलम बतावत बिया कि दिल्ली के सुंदर बनावे के नाम पऽ के तरे स्लम में रहे वाला लोगन के आशियाना के तूड़ के उनका के खदेड़ल जा रहल बा. तऽ 'सीटीज एज' में महाराष्ट्र के देवनार डंपिंग ग्राउंड में कूड़ा बीन के जिनगी बसर करे वालन के व्यथा बा. डंपिंग ग्राउंड में कूड़ा बीन रहल दू मासूम बचवन पऽ कैमरा के फोकस ई बता देलस कि एह बचवन के जिनगी 'जहर' से खेल रहल बिया.

फेस्टिवल में केरल के मल्लापुरम जिला के निलांबर जंगलन में रहे वाला लुप्तप्राय जंगली 'चोलनायक' आदिवासी समुदाय के त्रासदी पऽ आधारित डाक्युमेंट्री 'द लास्ट पेज' में ई देखावल गइल बा कि दबंगन अउर साधन सपन्न लोग डरा-धमका के दैहिक शोषण के चलते एह समुदाय के लोग जवान होखे से पहिले आपन बेटियन के नसबंदी करा रहल बाड़े. दैहिक शोषण के चलते ई गर्भवती हो जाली अउर बिन ब्याहे माई बने के मजबूर हो जाली. तऽ 'द रैट रेस' मुंबई महानगर पालिका (मनपा) में दिहाड़ी पऽ काम करे वाला मुसहरन के जिनगी पऽ आधारित बिया. कालेज के छात्र से लेके पूणे विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र में एमए करे वाला आदमी अभाव अउर बेरोगारी के वजह से चूहा मारे के काम करे के मजबूर बा. मुंबई में चूहा के बहुतायत आम लोगन के जीअल दूभर कइले बा. मनपा के ई अस्थाई कर्मचारी रातभर टार्च लेके चूहन के तलाश कऽ के उनका डंडा से मारत बा. उनका रोज कम से कम 30 चूहा मारे के होला, तबे उनके दिहाड़ी मिलत बा.

नव साल पहिले शुरु भइल ई डाक्युमेंट्री फिलम फेस्टीवल अब सरकार के नीतियन के प्रभावित भी करे लागल बा. अमित चंद्रा के मोताबिक, 'एह डाक्युमेंट्री फेस्टीवेल से जन मुद्दा के लेके एगो माहौल बनत बा. फेस्टीवल में पुरस्कृत डाक्युमेंट्री के हमनी छात्र, नेतन, नीति निर्माता अउर बुद्जीवीयन के देखावेली, एह से सरकार पऽ दवाब बनत बा अउर ऊ जन आकांक्षावन के अनुरूप आपन नीति में बदलाव करत बिया. '2009 के डाक्युमेंट्री फिलम फेस्टीवल में बांस कारीगरन के समस्या पऽ आधारित हॉलो सिलेंडर नाम के एगो डाक्युमेंट्री देखावल गइल रहे. एकरा व्यापक असर रहल. अमित कहत बाड़े, 'हमनी एकरा के कुछ सांसद अउर तबहिन के प्रर्यावरण मंत्री जयराम रमेश के देखावले रहे. जवना के बाद तय भइल कि बांस के 'पेड़' के श्रेणी से हटा के 'घास' के श्रेणी में रखल जाई. असल में, वन कानूनन के मोताबिक पेड़ के रउआ काट नइखी सकत, बाकिर घास के दोहन कऽ सकत बानी. फेलहाल, एह आधार पऽ बांस के कटाई गैरकानूनी बा. जबकि बांस पऽ देश के लाखो आदिवासियन के जीविका निर्भर बा. वन अउर पर्यावरण मंत्रालय बांस के घास के श्रेणी में शामिल करे पऽ सहमत हो गइल बा अउर जल्दिए एह बावत कानून में संशोधन कऽ दीहल जाई. 'एही तरे से रेहड़ी पटरी वाला के भी समस्या सब से निजाद दिलावे खातिर भी सरकार कानून बना रहल बिया. सरकारी नीतियन में बदलाव एह डाक्युमेंट्री फिल्म फेस्टीवल के सार्थकता के साबित करत बा.